

सलोकु ॥

निरगुनीआर इआनिआ  
सो प्रभु सदा समाति ॥  
जिनि कीआ तिसु चीति रखु  
नानक निबही नालि ॥१॥

असटपदी ॥

रमईआ के गुन चेति परानी ॥  
कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥  
जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥  
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥  
बार बिबसथा तुझहि पिआरै दूध ॥  
भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥  
बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥  
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥  
इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥  
बखसि लेहु तउ नानक सीझै

॥१॥

जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥  
सुत भ्रात मीत बनित्ता संगि हसहि ॥  
जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥  
सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥  
जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥  
सगल समग्री संगि साथि बसा ॥  
दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥  
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥  
ऐसे दोख मूढ़ अंध बिआपे ॥  
नानक काढि लेहु प्रभ आपे  
॥२॥

आदि अंति जो राखनहारु ॥  
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥  
जा की सेवा नव निधि पावै ॥  
ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥  
जो ठाकुरु सद सदा हजूरै ॥  
ता कउ अंधा जानत दूरै ॥  
जा की टहल पावै दरगह मानु ॥  
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥  
सदा सदा इहु भूलनहारु ॥  
नानक राखनहारु अपारु

॥३॥

रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥  
साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥  
जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥  
जो होवनु सो दूरि परानै ॥  
छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥  
संगि सहाई तिसु परहरै ॥  
चंदन लेपु उतारै धोइ ॥  
गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥  
अंध कूप महि पतित बिकराल ॥  
नानक काढि लेहु प्रभ दइआल  
॥४॥

करतूति पसू की मानस जाति ॥  
लोक पचारा करै दिनु राति ॥  
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥  
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥  
बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥  
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥  
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥  
गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥  
जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥  
नानक ते जन सहजि समाति

॥५॥

सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥  
करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥  
कहा बुझारति बूझै डोरा ॥  
निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥  
कहा बिसनपद गावै गुंग ॥  
जतन करै तउ भी सुर भंग ॥  
कह पिंगुल परबत पर भवन ॥  
नही होत ऊहा उसु गवन ॥  
करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥  
नानक तुमरी किरपा तरै  
॥६॥

संगि सहाई सु आवै न चीति ॥  
जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥  
बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै ॥  
अनद केल माइआ रंगि रसै ॥  
द्रिडु करि मानै मनहि प्रतीति ॥  
कालु न आवै मूड़े चीति ॥  
बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥  
झूठ बिकार महा लोभ धोह ॥  
इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥  
नानक राखि लेहु आपन करि करम  
॥७॥



तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥  
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥  
तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥  
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ॥  
कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥  
ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥  
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥  
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥  
तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥  
नानक दास सदा कुरबानी  
॥८॥४॥